भगवद गीता को समझें
18 दिनों में

अध्याय । – कुरुक्षेत्र के युद्धस्थल में सैन्यनिरीक्षण

ISKCON MANGALURU

इस्कॉन राधा गोविंदा मंदिर मंगलौर

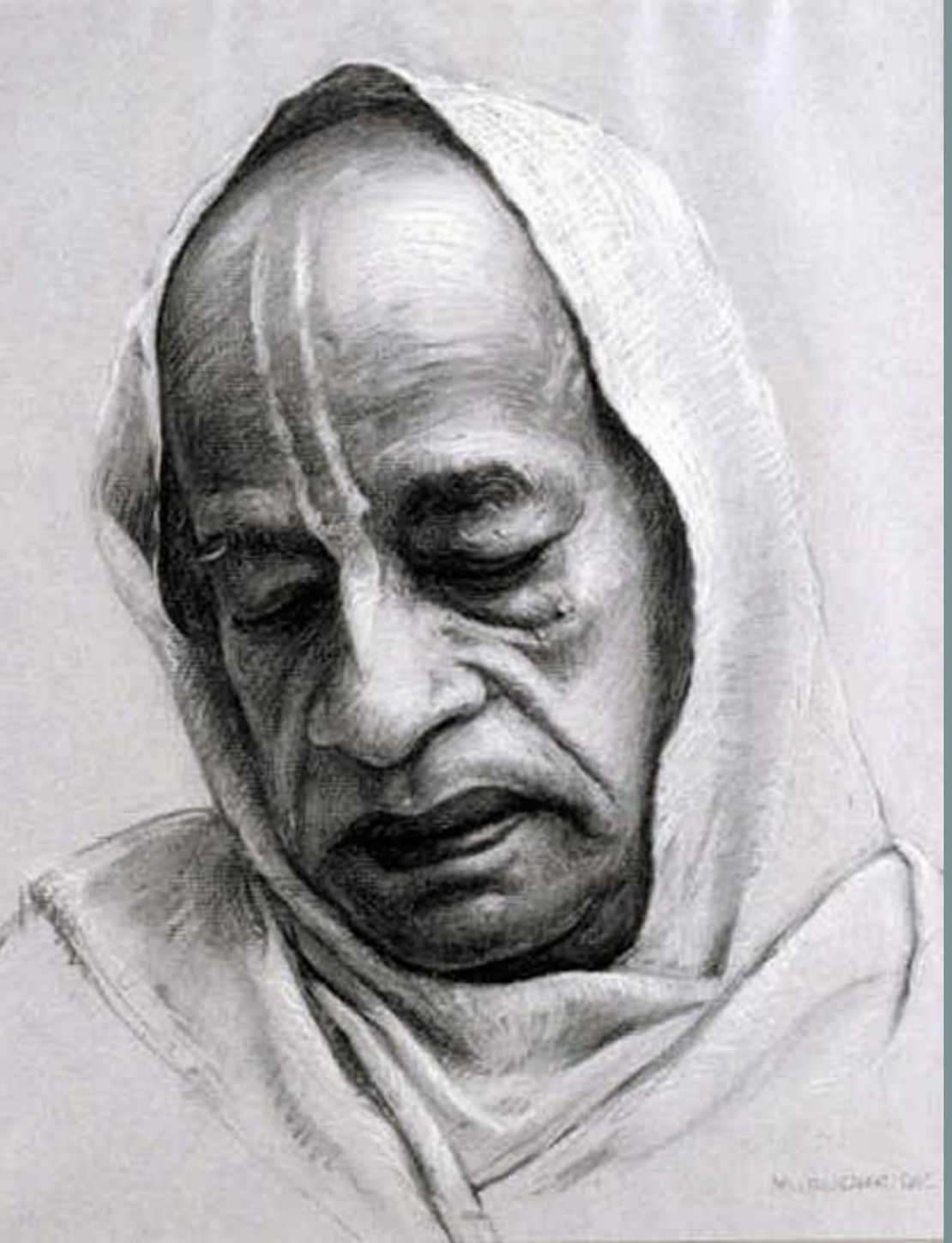

कौन हैं स्वामी प्रभुपाद ?

भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद
फाउंडर-आचार्य इस्कॉन
(अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण
कृष्णभावनामृत संगठन)
की शिक्षाओं पर आधारित

ISKCON
MANGALURU

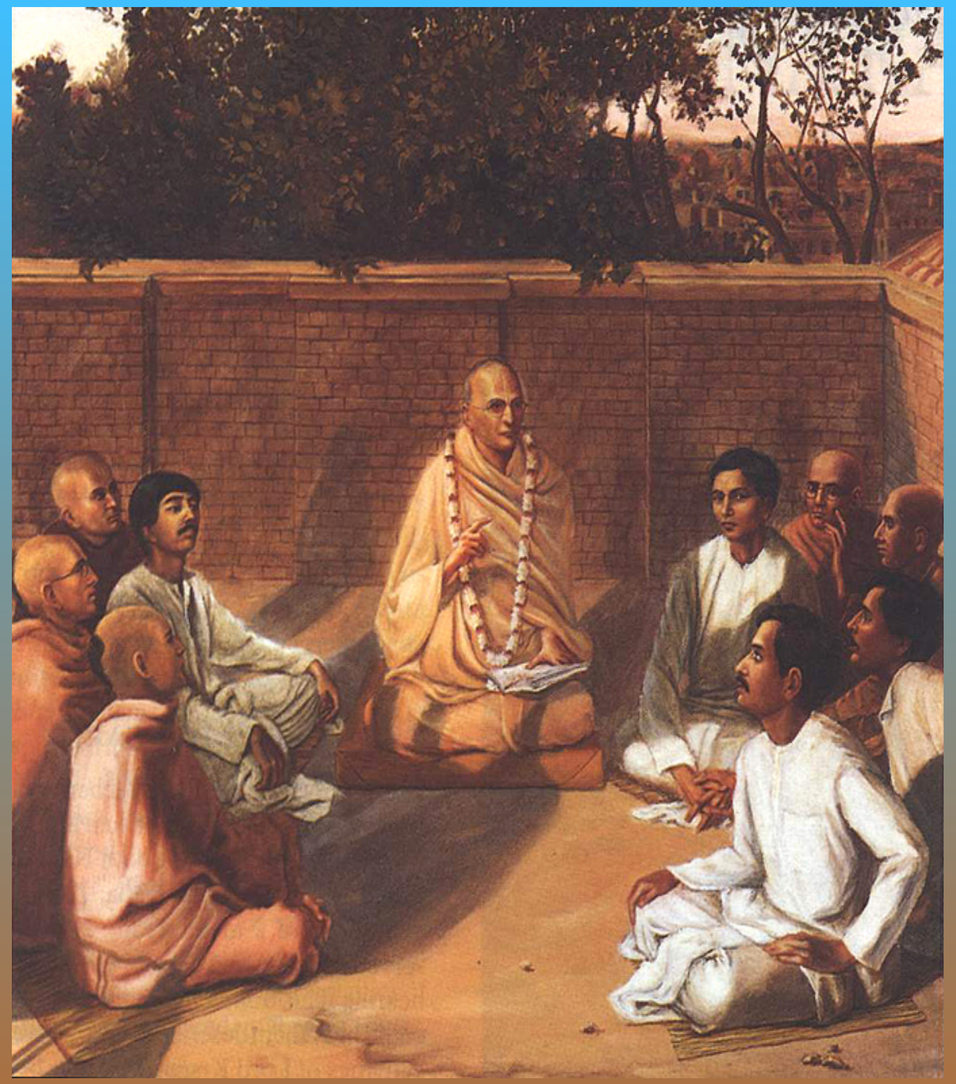

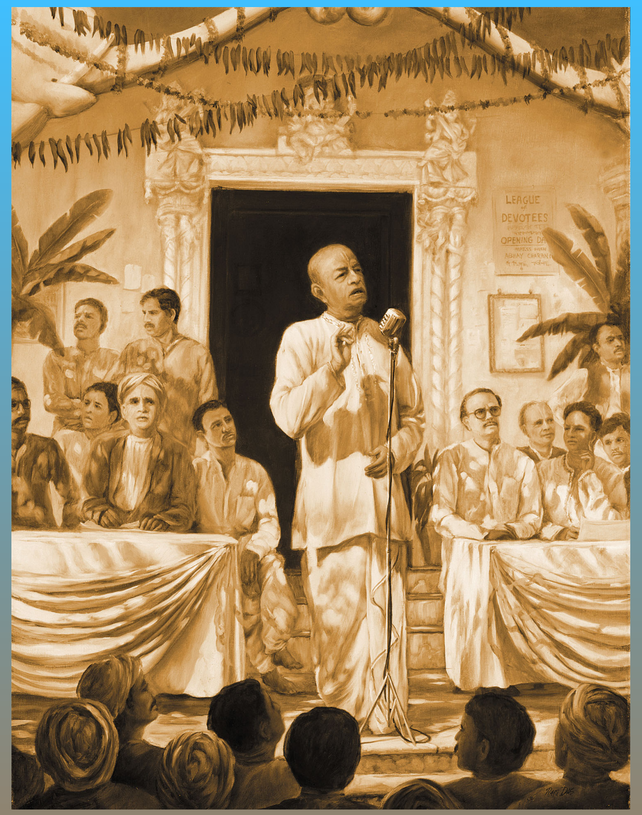

ISKCON
MANGALURU

1965

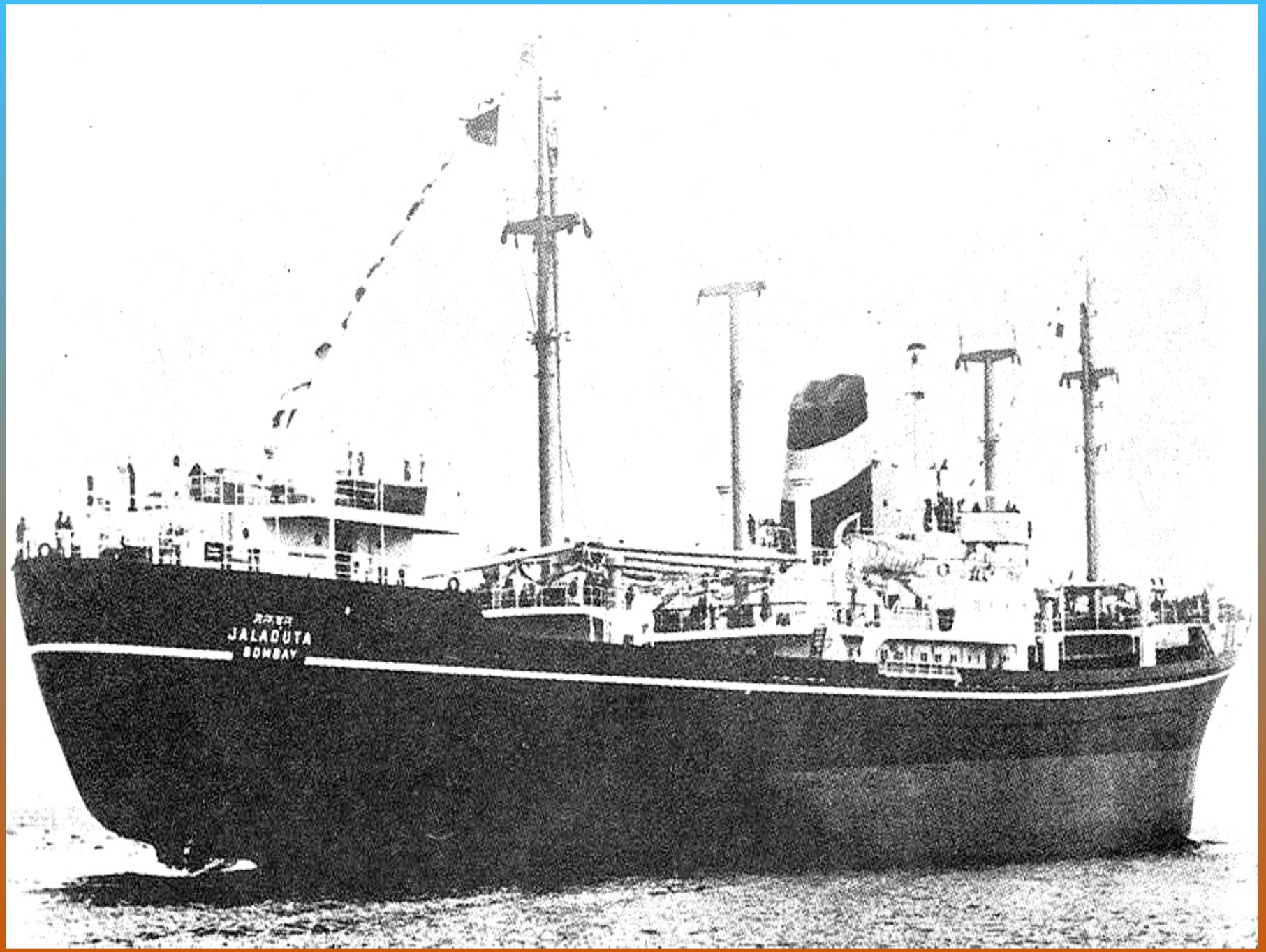

ISKCON
MANGALURU

कौन हैं स्वामी प्रभुपाद ?

इस्कॉन की स्थापना 1966 में हुई थी

ISKCON
MANGALURU

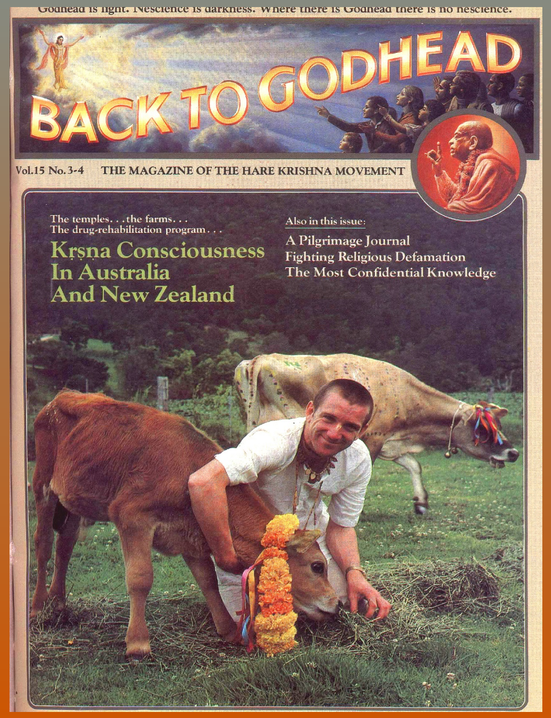

ISKCON
MANGALURU

Timeline of A. C. Bhaktivedanta Swami's travels (1965-1977)

Aug 13: INDIA

1965

इस्कॉन राधा
गोविंदा मंदिर
Mangaluru

मैंगलोर में स्थित है
श्री श्री राधा गोविंदा मंदिर

Coconut Garden Road,
Tollgate,Kadri, Mangalore,
Karnataka 575002

मंदिर के अध्यक्ष

नाम निष्ठा दास

B.Tech, IIT Kanpur

iskconmangaluru.com

youtube.com/user/namanishthadas/

ISKCON
MANGALURU

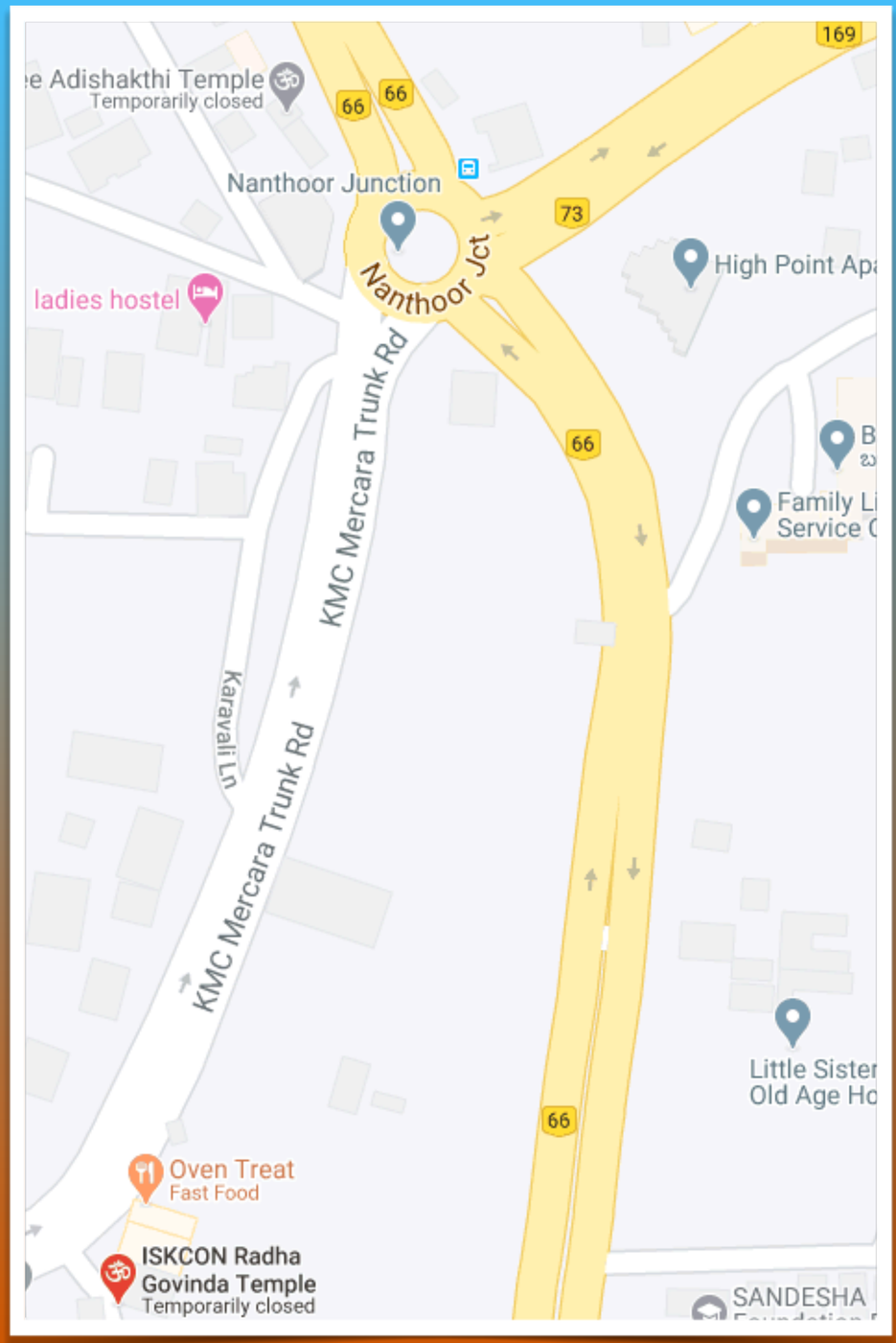

भगवद गीता एक महाकाव्य ग्रंथ है जिसमें हमारी सभी समस्याओं के उत्तर हैं। यह महात्मा गांधी द्वारा एक आध्यात्मिक शब्दकोश माना जाता था और यह पूरे विश्व के कई लोगों के लिए प्रेरणा की पुस्तक है।

ISKCON
MANGALURU

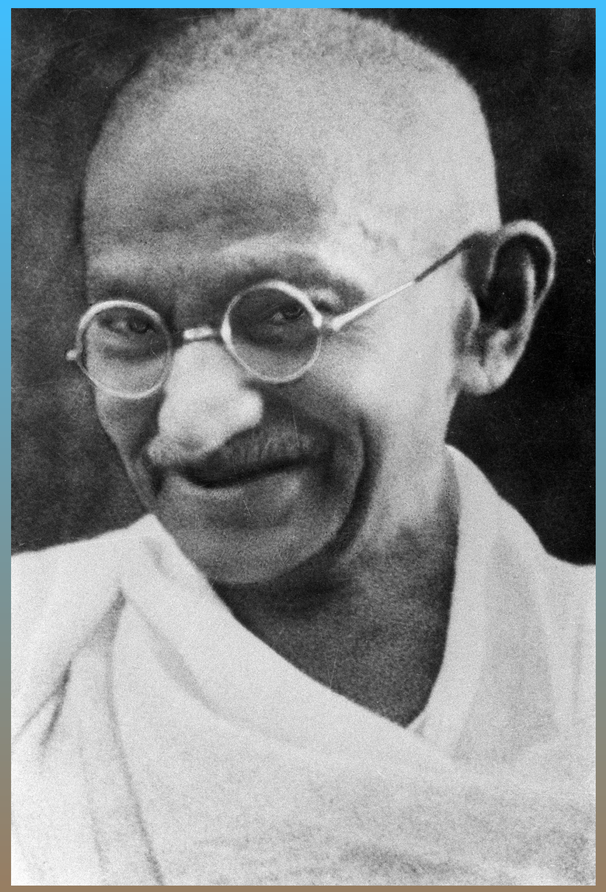

जो लोग गीता का ध्यान करते हैं, वे हर दिन ताजा आनंद और नए अर्थ प्राप्त करेंगे।

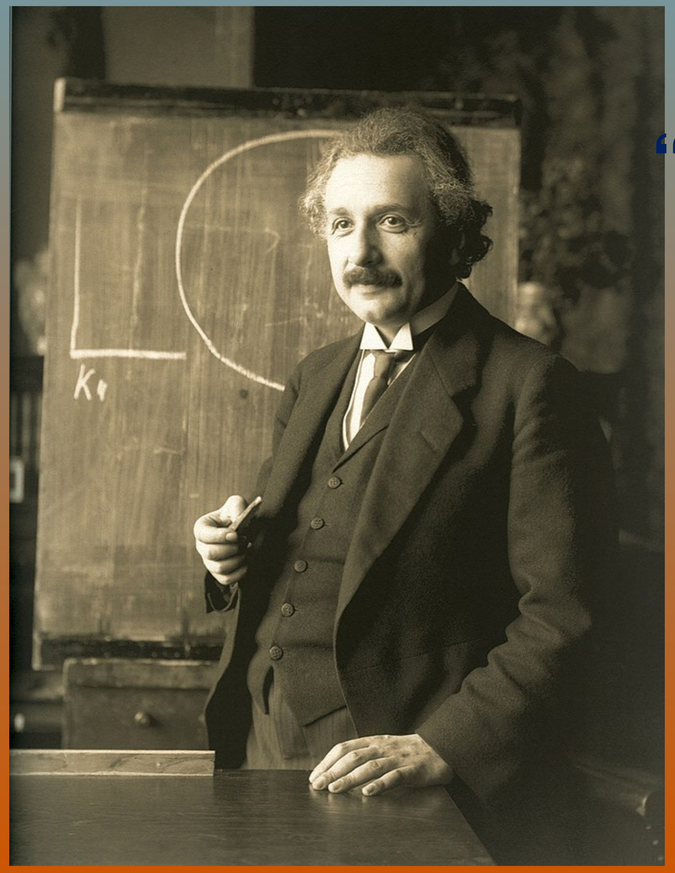

“जब मैं भगवद गीता पढ़ता हूं और महसूसकरता हूं कि भगवान ने इस ब्रह्मांड को कैसे बनाया है, जो इतना शानदार है.”

ISKCON
MANGALURU

कृष्ण का संदेश गुरु परम्परा के माध्यम से आना चाहिए

"भगवद गीता (यथा रूप) का अध्ययन क्यों करें ??

ISKCON MANGALURU

गीता एक विशाल ग्रंथ है। गीता के एक व्यवस्थित अध्ययन में लगभग एक वर्ष लगेगा

18 दि नों में हम ऐसा नहीं कर सकते।

इसलिए,

हम कृष्ण और अर्जुन के बीच विचारों के प्रवाह पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं

उद्देश्य: गीता के गहन अध्ययन के लिए आप को तैयार करना

ISKCON
MANGALURU

भगवतगीता का mood

अर्जुन की माया को कृष्ण की व्यवस्था समझना होगा।
यदि अर्जुन भ्रमित नहीं होता तो कृष्ण को भगवद गीता बोलने के लिए कोई आवश्यकता नहीं होती। अर्जुन भगवद-गीता के स्पष्ट पहले श्रोता हैं। फिर भी भगवद-गीता सभी के हित के लिए है।

ISKCON
MANGALURU

हर यात्रा की शुरुआत एक ही कदम से होती है

गीता के रहस्यवाद में यात्रा शुरू करते हैं

आप का स्वागत है

ISKCON
MANGALURU

Gita Mahatmya

ISKCON
MANGALURU

श्री आदिशंकराचार्य द्वारा वर्णित श्रीमद भगवद-गीता की महिमा।

गीता शास्त्रं इदं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः पुमान् ।
विष्णोः पादं अवाप्नोति भय शोकादि वर्जितः ।।

भगवद्गीता दिव्य साहित्य है। जो इसे ध्यानपूर्वक पढ़ता है
और इसके उपदेशों का पालन करता है,
वह भगवान् विष्णु का आश्रय प्राप्त करता है
जो कि समस्त भय तथा चिंताओं से मुक्त है। (गीता माहात्म्य 1)

ISKCON
MANGALURU

श्री आदिशंकराचार्य द्वारा वर्णित श्रीमद भगवद-गीता की महिमा।

गीताध्ययनशीलस्य प्राणायामपरस्य च ।
नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्मकृतानि च ॥

“यदि कोई भगवद्गीता को निष्ठा तथा गम्भीरता के साथ पढ़ता है तो भगवान् की कृपा से उसके सारे पूर्व दुष्कर्मों के फ़लों का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।” (गीता महात्म्य २)

ISKCON
MANGALURU

श्री आदिशंकराचार्य द्वारा वर्णित श्रीमद भगवद-गीता की महिमा।

मलिनेमोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने ।
सकृद्गीतामृतस्नानं संसारमलनाशनम् ॥

“मनुष्य जल में स्नान करके नित्य अपने को स्वच्छ कर सकता है,
लेकिन यदि कोई भगवद्गीता-रूपी पवित्र गंगा-जल में एक बार भी स्नान कर ले
तो वह भौतिक जीवन (भवसागर) की मलिनता से
सदा-सदा के लिए मुक्त हो जाता है ।” (गीता महात्म्य ३)

ISKCON
MANGALURU

श्री आदिशंकराचार्य द्वारा वर्णित श्रीमद भगवद-गीता की महिमा।

गीता सुगीताकर्तव्या किमन्यौः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिः सृता ॥

चूँकि भगवद्गीता भगवान् के मुख से निकली है,
अतएव किसी अन्य वैदिक साहित्य को पढ़ने की आवश्कता नहीं रहती ।
केवल भगवद्गीता का ही ध्यानपूर्वक तथा मनोयोग से श्रवण तथा पठन करना चाहिए ।
केवल एक पुस्तक, भगवद्गीता, ही पर्याप्त है क्योंकि यह समस्त वैदिक ग्रंथो का सार है
और इसका प्रवचन भगवान् ने किया है।”(गीता महात्मय ४)

ISKCON
MANGALURU

श्री आदिशंकराचार्य द्वारा वर्णित श्रीमद भगवद-गीता की महिमा।

भारतामृतसर्वस्वं विष्णुवक्त्राद्विनिः सृतम ।
गीता- गङ्गोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ॥

“जो गंगाजल पीता है, वह मुक्ति प्राप्त करता है ।
अतएव उसके लिए क्या कहा जाय जो भगवद्गीता का अमृत पान करता हो?
भगवद्गीता महाभारत का अमृत है औरइसे भगवान् कृष्ण (मूल विष्णु) ने स्वयं सुनाया है ।” (गीता महात्म्य ५)

ISKCON
MANGALURU

श्री आदिशंकराचार्य द्वारा वर्णित श्रीमद भगवद-गीता की महिमा।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः ।
पार्थो वत्सः सुधिभोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ।।

“यह गीतोपनीषद, भगवद्गीता, जो समस्त उपनिषदों का सार है, गाय के तुल्य है और ग्वालबाल के रूप में विख्यात भगवान् कृष्ण इस गाय को दुह रहे है । अर्जुन बछड़े के समान है, और सारे विद्वान् तथा शुद्ध भक्त भगवद्गीताके अमृतमय दूध का पान करने वाले हैं ।” (गीता महात्म्य ६)

ISKCON
MANGALURU

श्री आदिशंकराचार्य द्वारा वर्णित श्रीमद भगवद-गीता की महिमा।

एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतम् ।
एको देवो देवकीपुत्र एव ।।
एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि।
कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा ।।

“आज के युग में लोग एक शास्त्र, एक ईश्वर, एक धर्म तथा एक वृति के लिए अत्यन्त उत्सुक हैं। अतएव सारे विश्व के लिए केवल एक शास्त्र भगवद्गीता हो। सारे विश्व के लिए एक इश्वर हो- देवकीपुत्र श्रीकृष्ण । एक मन्त्र, एक प्रार्थना हो- उनके नाम का कीर्तन,
हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण, हरे हरे। हरे राम, हरे राम, राम राम, हरे हरे।
केवल एक ही कार्य हो – भगवान् की सेवा ।” (गीता महात्म्य ७)

ISKCON
MANGALURU

अर्जुन विसर्ग योग

अर्जुन का योग विलाप

ISKCON
MANGALURU

Different reactions to the same scene

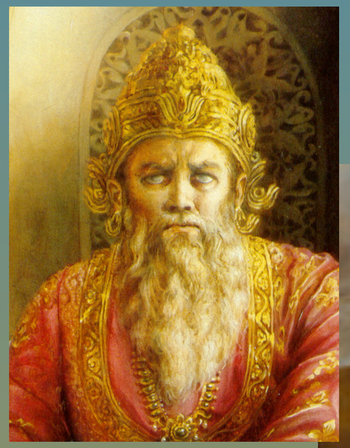

ISKCON
MANGALURU

धृतराष्ट्र उवाच
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय
॥१॥

धृतराष्ट्र ने कहा -- हे संजय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा से एकत्र हुए मेरे तथा पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया ?

ISKCON
MANGALURU

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे

मामकाः पाण्डवा

किमकुर्वत

ISKCON
MANGALURU

महाभारत में वर्णित धृतराष्ट्र तथा संजय की वार्ताएँ इस महान दर्शन के मूल सिद्धान्त का कार्य करती हैं । माना जाता है कि इस दर्शन की प्रस्तुति कुरुक्षेत्र के युद्धस्थल में हुई जो वैदिक युग से पवित्र तीर्थस्थल रहा है । इसका प्रवचन भगवान् द्वारा मानव जाति के पथ-प्रदर्शन हेतु तब किया गया जब वे इस लोक में स्वयं उपस्थित थे ।

ISKCON
MANGALURU

1.2-3

संजय ने कहा - हे राजन! पाण्डुपुत्रों द्वारा सेना की व्यूहरचना देखकर राजा दुर्योधन अपने गुरु के पास गया और उसने ये शब्द कहे ।

हे आचार्य! पाण्डुपुत्रों की विशाल सेना को देखें, जिसे आपके बुद्धिमान् शिष्य द्रुपद के पुत्र ने इतने कौशल से व्यवस्थित किया है ।

ISKCON
MANGALURU

1.19

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलोऽभ्यनुनादयन् ॥१९॥

ISKCON
MANGALURU

Dharmaksetra
Divine Chariot
Kapidhwaja
Shankha Nada
Gandiva (Pashupatastra)
Tyakta Jivita
Mokshada Ekadasi
BhagyaLakshmi
Hrsikesa
ISKCON
MANGALURU

- दया(BG 1.28)
- कोई आनंद नहीं(BG 1.31)
- पाप(BG1.36)
- पारिवारिक परंपराएँ(BG 1.39)
- दुविधा(BG 2.6)

ISKCON
MANGALURU

1.28

अर्जुन उवाच ।
दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण
युयुत्सुं समुपस्थितम् ।
सीदन्ति मम गात्राणि
मुखं च परिशुष्यति ॥२८॥

ISKCON
MANGALURU

1.31

न च श्रेयोऽनुपश्यामि
हत्वा स्वजनमाहवे ।
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण
न च राज्यं सुखानि च ॥३१॥

ISKCON
MANGALURU

१.३६

पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ।
तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥
३६॥

ISKCON
MANGALURU

1.39

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥३९॥

ISKCON
MANGALURU

2.6

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम-
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥६॥

ISKCON
MANGALURU

ISKCON
MANGALURU